भावार्थ पाठ 3 - आत्मकथ्य (जयशंकर प्रसाद)

कक्षा 10 हिंदी अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 1

मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मरझाकर गिरे रही पतियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गम्भीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना टयंय्य-मलिन उपहास
तब भी कहते हो-कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।
किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

भाव्यार्थ:

कवि जयशंकर प्रसाद भौरों के माध्यम से अपनी कथा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि हे मन रूपी भौरों! गुन-गुनाकर अपनी कौन-सी कहानी कह रहा है? कवि के जीवन की इच्छाएँ उचित वातावरण न पाकर मरझाकर गिर रही हैं अर्थात उसके जीवन को सुख पहुँचाने वाली खुशियाँ एक-एक करके उसका साथ छोड़कर चली गई हैं।

इस विशाल विस्तार वाले आकाश में न जाने कितने महान पुरुषों ने अपने जीवन की कथाएँ लिखी हैं। उन्हें पढ़कर ऐसा प्रतीत होता हैं कि वह स्वयं अपना उपहास कराते हैं। मेरा यह जीवन अनंत अभावों और बुराइयों से भरा हुआ है। फिर भी मित्रों तुम मुझसे यह कहते हो कि मेरे जीवन में जो कमियाँ हैं, जो मेरे सांथ घटित हुआ है, उसे मैं सबके सामने कह डालूँ।

क्या तुम मेरी कहानी को सुनकर सुख प्राप्त कर सकोगे? मेरा मन तो खाली गागर के समान है, जिसमें कोई भाव नहीं हैं। कहीं तुम्हारा मन भी तो मेरी तरह भावों से खाली नहीं है और तुम मेरे भावों दद्दरा अपने मन के खालीपन को भरना चाहते हो अर्थातू ऐसा तो नहीं है कि मेरे खाली जीवन को देखकर तुम्हें सुख प्राप्त होगा।

Online Teaching With Nikita

STUDY SMART BE BRIGHT

भावार्थ पाठ 3 - आत्मकथ्य (जयशंकर प्रसाद)

कक्षा 10 हिंदी अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 2

यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाओं में।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसकव्य कर जो भाग गया।

भावार्थ:

कवि कहता है कि यह तो दुर्भाग्य की बात होगी कि सरल मन वाले की मैं हँसी उड़ाऊँ। मैं तो अभी तक स्वयं दूसरों के स्वभाव को समझ नहीं पाया हूँ। मैं तुम्हारे सामने अपनी कविताएँ प्रकट करूँ या लोगों के छलकपटपूर्ण व्यवहार को एवं दुनिया से मुझे जो धोखे मिले हैं, उन्हें तुम्हें बताऊँ।

मैं उन मधुर चाँदनी रातों की उज्ज्वल गाथा को कैसे गाऊँ, जिसमें हँसते-खिलखिलाते हुए प्रिय के साथ बातें होती थीं। उन निजी क्षणों का वर्णन मैं कैसे कर सकता हूँ? उन क्षणों को लोगों को बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। कवि अपनी आत्मकथा बताते हुए कहता है कि मुझे जीवन में वह सुख कहाँ मिला, जिसका स्वप्न देखकर मैं जाग गय्या। सुख तो मेरी बाँहों में आने से पहले ही मुसकुव्य कर भाग गया अर्थात तेरी अभिलाषाएँ कभी सफल नहीं हुई, मुझे कभी सुख की प्राप्ति नहीं हुई।

मैं तो तुम्हारे सामने अपनी माँगें प्रकट कर सकता हूँ या लोगों के छलकपटपूर्ण व्यवहार को एवं दुनिया से मुझे जो धोखे मिले हैं, उन्हें तुम्हें बताऊँ। अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाओं में तो अभी तक स्वयं दूसरों के स्वभाव को समझ नहीं पाया हूँ । मैं तुम्हारे सामने अपनी कविताएँ प्रकट करूँ या लोगों के छलकपटपूर्ण व्यवहार को एवं दुनिया से मुझे जो धोखे मिले हैं, उन्हें तुम्हें बताऊँ।

भावार्थ पाठ 3 - आत्मकथ्य (जयशंकर प्रसाद)

कक्षा 10 हिंदी अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 3

जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहान मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।
सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कथा की?
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सम्नाता में मौन रहूँ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

भाव्यांर्थ:

कवि अपनी प्रिया के सौंर्दय का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उसके लालिमायुक्त गालों को देखकर ऐसा लगता था जैसे प्रेम बिखेरती उषा उदित हो रही हो अर्थात् ऐसा लगता था जैसे प्रेम से भरी उषा उसकी ओर खिंची चली आ रही हो।

उषा भी अपनी ललिमा उसी से लिया करती थी। आज मैं उसकी ही यादों का सहारा लेकर अपने जीवन के रास्ते की थकान दूर करता हूँ अर्थात् उसी की यादें मेरे थके हुए जीवन का सहारा बनीं।

मेरे जीवन में सुख के ऐसे पल कभी नहीं आए, जिनसे तुम प्रेरित हो सको। इसलिए क्यों तुम मेरे जीवन की कहानी को खोलकर, उधेड़कर देखना चाहते हो। मेरे इस छोटे-से जीवन में अभावों से भरी बड़ी-बड़ी कथएँ हैं। मैं अपने जीवन की उन सामान्य गाथाओं को कैसे कहूँ? मेरे लिए यही अच्छा रहेगा कि मैं दूसरे महान लोगों की कथाओं को सुनता रहूँ और अपने बारे में चुप रहूँ। भला तुम मेरी भोली-भाली आत्मकथा को सुनकर क्या प्रेरणा प्राप्त कर सकोगे? मेरा दु:ख इस समय शांत है। वह अभी थककर सोया है। इसलिए अभी आत्मकथा को लिखने का उचित समय नहीं आया है।

Online Teaching With Nikita

STUDY SMART BE BRIGHT